माना कि कलयुग का अन्धेरा घना है।
पर अधर्म की पूजा करना तो मना है।।

साई के शिष्य श्री गोविन्दराव रघुनाथ दोभालकर हेमाडपन्त द्वारा लिखित व
श्री साई बाबा विश्वस्त, शिर्डी, द्वारा प्रकाशित ।

श्री साई सत्चरित्र के मुख्य बिन्दु :–

- **अध्याय 14** = दक्षिणा मीमांसा : के अनुसार साई बीडी/तम्बाकू पीते थे।
- **अध्याय 28** = कुदृष्टि के अनुसार चावडी का जुलूस देंखने के दिन बाबा कफ से अधिक पीड़ित थे ।
- **अध्याय 43/44** = 72 घन्टे के अनुसार साई सन् 1886 में मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन बाबा को दमा से अधिक पीड़ा हुई ।
- **अध्याय 23**=गुरूभाक्ति : (साई) " श्वासोच्छवास (प्राणायाम) नियंत्रण, हठयोग या अन्य कठिन साधनाओं की कोई आवश्यकता नहीं है"।
- **अध्याय 5** शिरडी में एक पहलवान था, जिसका नाम मोहिदीन तम्बोली था, बाबा का उससे किसी विषय पर मतभेद हो गया। फलस्वरूप दोनों में कुश्ती हुई और बाबा हार गयें।
- **अध्याय 5** : (साई) "अल्लाह मालिक" का सदा उच्चारण किया करते थे।
- **अध्याय 23** मस्जिद में एक अत्यंत दुर्बल बूढा और मरने वाला बकरा लाया गया। लेकिन जेसे ही बाबा ने काका से कहा गया कि मैं स्वंय ही काटूँगा बकरा गिर कर मर गया।
- **अध्याय 38** : मॉसाहारी प्रसाद, मस्जिद से बर्तन मंगवाकर मौलवी के फातिहा पढ़ा कर हांडी में से लोगों को दिया जाता था।
- **अध्याय 18–19** : (साई) " इस मस्जिद में बैठ कर मैं सत्य ही बोलूंगां कि किन्ही साधनाओं या शास्त्रओं के अध्ययन की आवश्यकता नहीं "
- **अध्याय 10** :(साई) " न्याय अथवा मीमांसा या दर्शन शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है"।
- **अध्याय 13** : (साई) " कोई कितना भी दुखित और पीड़ित क्यों न हो, जैसे ही वह मस्जिद की सीढ़ियों पर पैर रखता है, वह सुखी हो जाता है"।
- **अध्याय 22** (साई) " यह मस्जिदमाई परम दयालु है । सरल हदय भक्तों की तो यह मॉ है और संकटों में उनकी रक्षा अवश्य करेगी। जो कोई उसकी छत्रछाया में विश्राम करता है, उसे आनन्द और सुख की प्राप्ति होती है"।
- **अध्याय 28** : साई मेघा की ओर देख कर कहने लगे, तुम तो एक उच्च कुलीन ब्राहम्ण हो और मैं बस निम्न जाति का यवन " (मुसलमान)

चिस्तृत विवरण के लिये श्री साई सत्चरित्र पढ़ें

साई के नाम पर मन्दिरों का इस्लामीकरण बन्द हो

पूजा चित्र की नहीं, चित्र के चरित्र की होती है।

साई के शिष्य श्री गोविन्दराव रघुनाथ दोभालकर हेमाडपन्त द्वारा लिखित व
श्री साई बाबा विश्वस्त, शिर्डी, द्वारा प्रकाशित ।

श्री साई सत्चरित्र का सार :–

अध्याय 6 मस्जिद का जीणोद्वार : दिन रात परिश्रम कर भक्तों ने लोहे के खम्बे जमीन में गाढे। जब दूसरे दिन चावडी में बाबा लोटे, उन्होंने उन खम्बों को उखाड फैंक दिया और अति क्रोधित हो गये। वे एक हाथ से खंबा पकड़कर उसे उखाडने लगे और दूसरे हाथ से उन्होंने तात्या का साफा उतार दिया और उसमें आग लगा कर गढ्ढे में फैंक दिया। बाबा के नेत्र जलते हुए अंगारे के सदृष लाल हो गये..
..भागोजी शिर्दे (बाबा के एक कोढ़ी भक्त) कुछ साहस कर आगे बढ़े, पर बाबा ने उसकी वही दशा हुई
....अनायास ही बिना किसी गोचर कारण के वे क्रोधित हो जाया करते थे। ऐसी अनेक घटनायें देखने में आ चुकी हैं, परन्तु मैं इसका निर्णय नहीं कर सकता कि उनमें से कौन सी लिखुं और कौन सी छोडूं।
अध्याय 6 जिस समय गुलाब की वर्षा हो रही थी, तो उसके कुछ कण अनायास ही बाबा की आंख में चले गये, तब बाबा एकदम कुद्ध हो कर उच्च स्वर में अपशब्द कहने व कोसने लगे। यह दृश्य देख कर सब लोग भयभीत हो कर सिटपटाने लगे।
अध्याय 10 : बाबा .....कभी पत्थर मारते, कभी गालियॉ देते।
अध्याय 23 : .....श्यामा मस्जिद की और दोंडा, अपने बिठोबा श्री साईनाथ के पास जब बाबा ने उन्हें दूर से आते देखा तो वे झिडकने लगे और गाली देने लगे।
अध्याय 6, 10, 23 और 41 के अनुसार साई जब गुस्से में आते थे, तब वह गाली और अपशब्द बोलते थे, अधिक गुस्से में तो कई पिटे।
अध्याय 41 :(साई) " इतने वृद्ध हो कर भी तुम यहॉ चोरी करने को आए हो" ? इस के पश्चात् बाबा आपें से बाहर हो गये और उनकी ऑखें क्रोध के लाल हो गई। वे बुरी तरह से गालियां देने और डॉटने लगे। वे शान्तिपूर्वक सब सुनते रहे। वे मार पडने की भी आंशंका कर रहे थे।
अध्याय 10 : साई " न्याय अथवा मीमांसा या दर्शन शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है"।
अध्याय 23 : (बाबा) श्वासोच्छवास प्राणायाम का नियंत्रण का नियंत्रण, हठयोग या अन्य कठिन साधनाओं की कोई आवश्यकता नहीं है"।
अध्याय 28 से...."गंगा स्नान मुझे इस झंझट से दूर ही रहने दो। मैं तो फकीर(इस्लामी) हूँ"।
अध्याय 32 से.....बाबा ने स्वयं कभी भी उपवास नहीं किया, न ही उन्होंने दूसरों को करने दिया ।
अध्याय 38 से ...एक एकादशी के दिन उन्होंने केलकर को कुछ रूपये देकर कुछ मॉस खरीद कर लाने को कहा।
(बाबा ने एक ब्राहम्ण को बलपूर्वक बिरायनी का स्वाद चखने को मजबूर किया)
अध्याय 38 से ....ऐसे ही एक अन्य अवसर पर उन्होंने दादा से कहा कि, देखो तो नमकीन बिरयानी पुलाव कैसा पका है? दादा ने यों ही कह दिया कि अच्छा है। तब वे कहने लगे कि तुम ने न अपनी ऑखों के देखा और न ही जिह्वा से स्वाद लिया, फिर तुम ने यह कैसे कह दिया कि उत्तम बना है? थोड़ा ढक्कन हटाकर देखो। बाबा ने दादा की बांह पकड़ी और बलपूर्वक बर्तन में डाल कर बोले, थोड़ा इसमें से निकालो और अपना कट्टरपन (ब्राहम्णपन) छोड़कर चख कर देखो।

पूर्ण विवरण के लिये श्री साई सत्चरित्र पढ़ें

सनातन धर्म का इस्लामीकरण बन्द हो